एकायतन यात्रा

इन दोनों प्रमुख यात्राओं के अतिरिक्त एकायतन यात्रा से चतुर्दश-आयतन यात्रा तक के विधान पुराणों में मिलतें हैं, जिनको अपनी शक्ति तथा सुविधा के अनुसार काशीवासी करते रहे हैं, यद्यपि इनका चलन अब कम होने लगा है। एकायतन यात्रा का वर्णन 'सनत्कुमारसंहिता' में मिलता है। इ समें मणिकर्णिका-स्नान के उपरान्त विश्वेश्वर-दर्शन का विधान है। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि दैनन्दिनी तथा विश्वेश्वरी यात्राएँ, जिनका पहले वर्णन हो चुका है, इसी एकायतन यात्रा का ही परिवर्धित अथवा पूर्ण स्वरूप है। मणिकर्णिका तो काशी के प्रधान स्नानतीर्थ में मुख्य है हीं।

स्नात्वा मुमुक्षुमंणिकर्णिकायां मृडानि गङ्गहृतये तवास्ये।
विश्वेश्वरं पश्यति योऽपि योऽपि कोऽपि शिवत्वमायाति पुनर्न जन्म।४

प्राचीन लिंगपुराण में एकायतन का जो रूप है, वह विश्वेश्वर के प्राधान्य के पहले का है, जिसमें अविमुक्तेश्वर की यात्रा की एकायतन यात्रा कही गई है।

अवमुक्ते महाक्षेत्रेऽविमुक्तमवलोक्य च।
त्रिजन्मजनितं पापं हित्वा पुण्यमयो भवेत।।५
अविमुक्तं मदालिङ्गं योऽत्र द्रक्ष्यति मानवः।
न तस्य पुनरावत्तिः कल्पकोटिशैतरपि।।५

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.